3 कान्ह भए बस बाँसुरि के

रसखान

(जन्म : सन् 1548 ई. : निधन : सन् 1628 ई.)

रसखान का असली नाम सैयद इब्राहिम था। उनका जन्म दिल्ली के एक सम्पन्न पठान परिवार में हुआ था। रसखान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। गोस्वामी विठ्ठलनाथजी से दीक्षा ग्रहण कर ब्रज में रहकर कृष्ण-भक्ति के पद इन्होंने लिखे। इस मुसलमान कवि की कृष्ण-भक्ति अत्यंत सराहनीय है। इनकी कविता में कृष्ण की रूप-माधुरी, ब्रजमहिमा और राधा-कृष्ण की प्रेमलीलाओं का वर्णन किया गया है। उनकी भक्ति में प्रेम, श्रृंगार और सौंदर्य का अनोखा संगम है।

रसखान के कवित्त - सवैये अपने आप में अद्वितीय हैं। रसखान ने ब्रजभाषा में काव्य-रचना की। उनकी भाषा मधुर एवं सरस है। उनकी लिखी दो पुस्तकें प्रसिद्ध हैं- 'सुजान रसखान' व 'प्रेमवाटिका'।

यहाँ प्रस्तुत प्रथम कवित्त में सदैव कृष्ण के पास रहनेवाली बाँसुरी से गोपियाँ ईर्ष्या करती हैं। सौतिया-डाह से पीड़ित गोपियाँ अब ब्रज में रहना नहीं चाहती क्योंकि उनका स्थान अब बाँसुरी ने ले लिया है। दूसरे कवित्त में कृष्ण का स्वाँग रचनेवाली गोपियाँ सौतियाडाह के कारण उनकी बाँसुरी को, जो कृष्ण के ओठों पर थी, को अपने ओठों पर रखने से इन्कार कर देती हैं। कवि ने दोनों कवित्तों में गोपियों की मन:स्थिति का मार्मिक वर्णन किया है।

(1) कान्ह भए बस बाँसुरि के, अब कौन सखी, हमको चहिहै।
निसिद्यौस, रहे सँग-साथ लगी, यह सौतिन-तापन क्यों सहिहै।
जिन मोहि लियो मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आओ सबै सखि, भागि चलैं, अब तो ब्रज में बँसुरि रहिहै।

(2) मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पीतम्बर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

चहिहै चाहेगा **निसि** रात **घौस** दिन, **दहिहै** जलाएगी **मोर पखा** मोर पंख **गुंज** घुँघची, गुंजा **भावतो** रुचिकर, पसंद **अधर** ओठ, **धरौंगी** रखूँगी **सौतिन** सौत, पति की दूसरी पत्नी (यहाँ कृष्ण की बाँसुरी से अर्थ है) **तापन** दुख, कष्ट, संताप **लकुटी** लाठी **गोधन** गायरुपी धन (गायें), **ग्वारन संग** ग्वाल बालों के साथ, **फिरौगी** घूमूँगी, **स्वाँग** नकल करना, वेश धारण करना, **अधरान** ओंठों पर

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए:

(1) कृष्ण किसके हो गए हैं?
(क) गोपी के (ख) राधा के (ग) बाँसुरी के (घ) मोरपंख के

(2) गोपियाँ ब्रज छोड़कर क्यों भाग जाना चाहती हैं?
(क) ब्रज में गाय के रहने से (ख) ब्रज में ग्वाल-बाल के रहने से
(ग) ब्रज में ताप बढ़ने से (घ) ब्रज में बाँसुरी के रहने से

(3) गोपियाँ किसकी बनी माला पहनेंगी?
(क) गुंजा की (ख) मोरपंख की (ग) फूलों की (घ) मोती की

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कृष्ण को किसने मोह लिया है ?

(2) गोपियाँ कृष्ण की मुरली को क्या समझती हैं ?

(3) कृष्ण अपने सिर पर कौन-सा मुकुट धारण करते थे ?

(4) कृष्ण गले में किसकी माला पहनते थे ?

(5) किसके कहने पर गोपी कृष्ण का स्वाँग कर रही हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) गोपियाँ कृष्ण का कौन-सा स्वाँग रचती हैं ?

(2) गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी को अपने ओठों पर क्यों नहीं रखना चाहतीं ?

(3) गोपियाँ ब्रज से क्यों भाग जाना चाहती हैं ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच पंक्तियों में दीजिए :

(1) गोपियाँ कृष्ण की मुरली को अपनी सौत क्यों समझती हैं ?

(2) कृष्ण के वियोग में गोपियाँ किसका स्वांग रचेंगी ? कैसे ?

(3) गोपियाँ बाँसुरी से क्यों ईर्ष्या करती हैं ? रसखान के दोनों सवैयों के आधार पर उत्तर लिखिए।

(4) कृष्ण के स्वाँग में गोपियों का वर्णन कीजिए।

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्ति :** कृष्णभक्त रसखान के अन्य सवैये पढ़िए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्ति :** रसखान के सवैयों का सस्वर पाठ कक्षा में कराइए।

⊙